4 स्पर्श (हिन्दी)

तुम कब जाओगे , अतिथि

Grade - 9

Classnotes

प्रश्नों को पढ़कर दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1. **अतिथि के न जाने से लेखक की भावनाएँ किसका स्वरुप ग्रहण कर रही हैं ?**

   a. **गालियों का**
   b. प्रेम का
   c. स्नेह का
   d. ईर्ष्या का

2. **भारतीय संस्कृति में अतिथि को क्या माना जाता है ?**

   a. पिता
   b. **भगवान**
   c. परिवार
   d. इनमें से कोई नहीं

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. **तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो , उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है|देख रहे हो ना ! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं | विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखे बदल रहा हूँ तुम जानते हो , अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है , तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन ! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती |लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रोनोट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे , जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आये हो |तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर चुके , तुमने एक अन्तरंग निजी सम्बन्ध मुझसे स्थापित कर लिया , तुमने मेरी आर्थिक सीमाओ की बैंजनी चट्टान देख ली , तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके |अब तुम लौट जाओ , अतिथि तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है |क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती ?**

   (१) लेखक अतिथि को क्या दिखाकर क्या कहना चाहता है ?
   (२) अतिथि को घर में आए कितने दिन हो गए हैं ?
   (३) लेखक ने अतिथि को किसकी यात्रा के बारे में बताया ?
   (४) अतिथि ने किसकी बैंजनी चट्टान देखी ?
   (५) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए |

   १ लेखक अतिथि को कैलेंडर बताकर , अपने घर से कब जाना है , कहना चाहते हैं |
   २ अतिथि को घर में आए चार दिन हो गए हैं |
   ३ लेखक ने अतिथि को एस्ट्रोनोट्स की यात्रा के बारे में बताया |
   ४ अतिथि ने लेखक के घर की आर्थिक सीमाओ की बैंजनी चट्टाने देखी |
   ५ प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक " तुम घर कब जाओगे,अतिथि "

2. **आशंका निर्मूल नहीं थी , अतिथि! तुम जा नहीं रही , लौंड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यही हो |तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटे पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यही हो| तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है |ठहाको के रंगीन गुब्बारे ,जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे ,अब दिखाई नहीं पड़ते |बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनों से खाकर फिट सेंटर में आकर चुप पड़ी है |अब इसे न तुम हिला रहे हो , न मैं | कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ | और तुम फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो |शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए |परिवार,बच्चे , नौकरी , फिल्म , राजनीति , रिश्तेदारी , तबादले , पुराने दोस्त ,परिवार-नियोजन , महंगाई , साहित्य और यहाँ तक की आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओ का भी ज़िक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है| सोहाद्र अब शने:-शने: बोरियत में रूपांतरित हो रही है |भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं , पर तुम जा नहीं रहे |किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है , मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ |**

   १ शंका निर्मूल क्यों नहीं थी ?
   २ अतिथि के न जाने पर लेखक कि क्या हालत हुई ?
   ३ लेखक का जिक्र कैसा हो गया| जो चुप्पी सा छा गया था ?
   ४ लेखन की भावनाएँ किसमे बदल रही थी ?

4 - तुम कब जाओगे , अतिथि

Classnotes

५ प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए |

(१) लेखक की आशंका निर्मूल नहीं थी क्योंकि अतिथि घर छोड़कर नहीं जा रहे थे | लौंड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए , भरकम शरीर से कपड़े बदले जाने पर जाने का मन नहीं हो रहा था |
(२) अतिथि के न जाने पर लेखक की मुस्कुराहट लुप्त होती जा रही थी और न कोई उपन्यास पढ़ पा रहे थे |
(३) लेखक फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो |शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चूक गए |परिवार,बच्चे ,नौकरी , फिल्म , राजनीति , रिश्तेदारी , तबादली , पुराने दोस्त , परिवार-नियोजन ,महंगाई,साहित्य और यहाँ तक की आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओ का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी थी |
(४) लेखक की भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही है|
(५) प्रस्तुत गद्यांश का उचित "कब जाओगे ,अतिथि जी "

3. तुम्हे यहाँ अच्छा लग रहा है न! मैं जानता हूँ |दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है|अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते ,पर ऐसा नहीं हो सकता |अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं |होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरों के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े |तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है , पर सोचो प्रिय , कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है , जो बोला जा सकता है | अपने खर्राटो से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी |आशा है , वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे |मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी |उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूंगा और लड़खड़ा जाऊँगा| मेरे अतिथि , मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है , पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं |एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते |देवता दर्शन देकर लौट जाता है , तुम लौट जाओ अतिथि ! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा |यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे , उसके पूर्व तुम लौट जाओ !
उफ़, तुम कब जाओगे , अतिथि ?

१. स्वीटहोम किसे कहते है ?
२. अतिथि के न जाने पर लेखक ने क्या बताया है ?
३. अंत में लेखक ने देवता किसे कहा है ? क्यों ?
४. मनुष्य को दूसरों के घर कब तक रुकना चाहिए ?
५. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ?

१. स्वीटहोम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े |
२. अतिथि के न जाने पर लेखक ने शराफत भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है ,जो बोला जा सकता है |
३. मेरे अतिथि , मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है ,पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं |एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते |देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं |
४. मनुष्य को दूसरों के घर तब तक रुकना चाहिए |जब तक आपकी उस घर में इज़्ज़त हो|
५. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक " उफ़, तुम कब जाओगे "|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कम से कम शब्दों में लिखिए |

1. अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है ?

अतिथि चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है।

2. दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई ?

दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई।

3. तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा ?

अतिथि ने तीसरे दिन कहा कि वह अपने कपड़े धोबी को देना चाहता है।

4. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं में 'तुम' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए-

4 - तुम कब जाओगे , अतिथि

- **लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो।**
- **तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुसकुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है।**
- **तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी।**
- **कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो।**
- **भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे।**

उपर्युक्त वाक्यों में 'तुम' के सभी प्रयोग लेखक के घर आए अतिथि के लिए हुए हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक से दो वाक्यों में लिखिए |

1. कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं ?

कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही हैं। मानों वे भी अतिथि को बता रही हों कि तुम्हें यहाँ आए दो-तीन दिन बीत चुके हैं।

2. सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ ?

सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक उच्च मध्यमवर्गीय डिनर से खिचड़ी पर आ गया। यदि इसके बाद भी अतिथि नहीं गया तो उसे उपवास तक जाना पड़ सकता है।

3. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' यह प्रश्न लेखक के मन में कब घुमड़ने लगा ?

'तुम कब जाओगे, अतिथि'—यह प्रश्न लेखक के मन में तब घुमड़ने लगा जब लेखक ने देखा कि अतिथि को आए आज चौथा दिन है पर उसके मुँह से जाने की बात एक बार भी न निकली।

4. लेखक अपने अतिथि को दिखाकर दो दिनों से कौन-सा कार्य कर रहा था और क्यों ?

लेखक अपने अतिथि को दिखाकर दो दिनों से तारीखें बदल रहा था। ऐसा करके वह अतिथि को यह बताना चाह रहा था कि उसे यहाँ रहते हुए चौथा दिन शुरू हो गया है। तारीखें देखकर शायद उसे अपने घर जाने की याद आ जाए।

5. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि अतिथि मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है ?

लेखक ने देखा कि दूसरे दिन वापस जाने के बजाय अतिथि तीसरे दिन धोबी को अपने कपड़े धुलने के लिए देने की बात कह रहा है। इसका अर्थ यह है कि वह अभी रुकना चाहता है। इस तरह अतिथि ने अपना देवत्व छोड़कर मानव और राक्षस वाले गुण दिखाने शुरू कर दिए।

6. लेखक ने एस्ट्रानॉट्स का उल्लेख किस संदर्भ में किया है ?

लेखक ने एस्ट्रोनॉट्स का उल्लेख घर आए अतिथि के संदर्भ में किया है। लेखक अतिथि को यह बताना चाहता है कि लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद एस्ट्रानॉट्स भी चाँद पर इतने समय नहीं रुके थे जितने समय से अतिथि उसके घर रुका हुआ है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए |

1. लेखक को ऐसा क्यों लगने लगा कि अतिथि सदैव देवता ही नहीं होते ?

लेखक ने देखा कि उसके यहाँ आने वाले अतिथि उसकी परेशानी को देखकर भी अनदेखा कर रहा है और उस पर बोझ बनता जा रहा है। चार दिन बीत जाने के बाद भी वह अभी जाना नहीं चाहता है जबकि देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। वे इतना दिन नहीं ठहरते। इसके अलावा वे मनुष्य को दुखी नहीं करते तथा उसकी हर परेशानी का ध्यान रखते हैं। अपने घर आए अतिथि का ऐसा व्यवहार देखकर लेखक को लगने लगता है कि हर अतिथि देवता नहीं होता है।

2. लेखक और अतिथि के बीच सौहार्द अब बोरियत का रूप किस तरह लेने लगा था ?

अतिथि जब लेखक के यहाँ चौथे दिन भी रुका रह गया तो लेखक के मन में जैसा उत्साह और रुचि थी वह सब समाप्त हो गया। उसने विविध विषयों पर बातें कर ली थीं। अब और बातों का विषय शेष न रह जाने के कारण दोनों के बीच चुप्पी छाई थी। यह चुप्पी अब सौहार्द की जगह बोरियत का रूप लेती जा रही

थी।

3. अतिथि रूपी देवता और लेखक रूपी मनुष्य को साथ-साथ रहने में क्या परेशानियाँ दिख रहीं थीं ?

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता माना गया है जिसका स्वागत करना हर मनुष्य का कर्तव्य होता है। इस देवता और अतिथि को साथ रहने में यह परेशानी है कि देवता दर्शन देकर चले जाते हैं, परंतु आधुनिक अतिथि रूपी देवता मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर में मनुष्य की परेशानी भूल जाते हैं। जिस मनुष्य की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो उसके लिए आधुनिक देवता का स्वागत करना और भी कठिन हो जाता है।

4. लेखक के व्यवहार में आधुनिक सभ्यता की कमियाँ झलकने लगती हैं। इससे आप कितना सहमत हैं, स्पष्ट कीजिए ।

लेखक पहले तो घर आए अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत करता है परंतु दूसरे ही दिन से उसके व्यवहार में बदलाव आने लगता है। यह बदलाव आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट लक्षण है। मैं इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ। लेखक जिस अतिथि को देवतुल्य समझता है वही अतिथि मनुष्य और कुछ अंशों में राक्षस-सा नजर आने लगता है। उसे अपनी सहनशीलता की समाप्ति दिखाई देने लगती है तथा अपना बजट खराब होने लगता है, जो आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट प्रमाण है।

5. 'आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान' कहकर लेखक ने किस ओर संकेत किया है?

'आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान' कहकर अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति की ओर संकेत किया है। लेखक के घर आया अतिथि चौथे दिन भी घर जाने के लिए संकेत नहीं देता है, जबकि उसके इतने दिन रुकने से लेखक के घर का बजट और उसकी आर्थिक स्थिति खराब होने लगी थी।

6. जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए ?

जब अतिथि चार दिन के बाद भी घर से नहीं लौटा तो लेखक़ के व्यवहार में निम्नलिखित परिवर्तन आए :

- उसने अतिथि के साथ मुसकराकर बात करना छोड़ दिया। मुसकान फ़ीकी हो गई। बातचीत भी बंद हो गई।
- शानदार भोजन की बजाय खिचड़ी बनवाना शुरू कर दी।
- वह अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने को तैयार हो गया। उसके मन में प्रेमपूर्ण भावनाओं की जगह गालियाँ आने लगीं।

7. लेखक ने घर आए अतिथि के साथ 'अतिथि देवो भवः' परंपरा का निर्वाह किस तरह किया ?

लेखक ने अतिथि को घर आया देखकर स्नेह भीगी मुसकराहट के साथ उसका स्वागत किया और गले मिला। उसने अतिथि को भोजन के स्थान पर उच्च मध्यम वर्ग का डिनर करवाया, जिसमें दो-दो सब्जियों के अलावा रायता और मिष्ठान भी था। इस तरह उसने अतिथि देवो भव परंपरा का निर्वाह किया।

8. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ की प्रासंगिकता आधुनिक संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

'तुम कब जाओगे, अतिथि' नामक पाठ में बिना पूर्व सूचना के आने वाले उस अतिथि का वर्णन है जो मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर मेज़बान की परेशानियों को नज़रअंदाज कर जाता है। अतिथि देवता को नाराज़ न करने के चक्कर में मेज़बान हर परेशानी को झेलने के लिए विवश रहता है। वर्तमान समय और इस महँगाई के युग में जब मनुष्य अपनी ही ज़रूरतें पूरी करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा है और उसके पास समय और साधन की कमी है तब ऐसे अतिथि का स्वागत सत्कार करना कठिन होता जा रहा है। अतः यह पाठ आधुनिक संदर्भों में पूरी तरह प्रासंगिक है।